स्नातकोत्तर हिन्दी (द्वितीय सत्रार्द्ध)

पत्र - 06

बिहारी का जीवन परिचय

बिहारी रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि के रूप में जाने जाते थे। इनका जन्म संवत् 1595 ई० ग्वालियर में हुआ। वे जाति के माथुर चौबे थे। उनके पिता का नाम केशवराय था। जब बिहारी 8 वर्ष के थे तब इनके पिता इन्हें ओरछा ले आये तथा उनका बचपन बुंदेलखंड में बीता। इनके गुरु नरहरिदास थे और युवावस्था ससुराल मथुरा में व्यतीत हुई।

जन्म ग्वालियर जानिये खंड बुंदेले बाल।
तरुनाई आई सुघर मथुरा बसि ससुराल॥

कहा जाता है कि जयपुर-नरेश मिर्जा राजा जयसिंह अपनी नयी रानी के प्रेम में इतने डूबे रहते थे कि वे महल से बाहर भी नहीं निकलते थे और राज-काज की ओर कोई ध्यान नहीं देते थे। मंत्री आदि लोग इससे बड़े चिंतित थे किन्तु राजा से कुछ कहने की शक्ति किसी में न थी। बिहारी ने यह कार्य अपने ऊपर लिया। उन्होंने निम्नलिखित दोहा किसी प्रकार राजा के पास पहुँचाया:

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सों बिंध्यों, आगे कौन हवाल॥

इस दोहे ने राजा पर मंत्र जैसा कार्य किया। वे रानी के प्रेमपाश से मुक्त होकर पुनः अपना राज-काज संभालने लगे। वे बिहारी की काव्य कुशलता से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने बिहारी से और भी दोहे रचने के

लिए कहा और प्रत्येक दोहे पर एक अशर्फी देने का वचन दिया। बिहारी जयपुर नरेश के दरबार में रहकर काव्य-रचना करने लगे, वहाँ उन्हें पर्याप्त धन और यश मिला।

बिहारी की एकमात्र रचना - सतसई है जिसमें 713 दोहे युक्त ब्रजभाषा का मुक्तक काव्य है। बिहारी की भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है। इन्होंने अपनी भाषा में कहीं-कहीं मुहावरों का भी सुन्दर प्रयोग किये हैं। बिहारी की मृत्यु 1663 ई० में हो गई। इन्हें शृंगारिक कवि के रूप में जाने जाते हैं।

चेनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)
राज नारायण कॉलेज हाजीपुर
(BRABU, MUZAFFERPUR)